माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा व उनके माता-पिता की तत्संबंधी आकांक्षा तथा व्यावसायिक आकांक्षा पुनर्निर्धारण का अध्ययन

ममता बाकलीवाल*

स्पष्ट है कि व्यावसायिक क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर इस नव चिंतन पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है कि माध्यमिक स्तर पर ही छात्राओं को व्यावसायिक क्षेत्र संबंधी कौशलों के प्रति उन्मुख किया जाए। 15-16 वर्ष की किशोरावस्था में व्यावसायिक आकांक्षायें जन्म लेती हैं और उन्हीं के आधार पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की रचना की जानी चाहिए तभी वह स्वीकार्य होगा। आज शिक्षा को सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ मजबूत व्यावसायिक आधार प्रदान करने की नितांत आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के संदर्भ में यह अध्ययन किया गया है। ग्रामीण, प्रशासनिक, औद्योगिक, व्यापारिक परिवेश से चयनित कक्षा दसवीं की 394 तथा ग्यारहवीं की 355 छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं तथा उनके माता-पिता की तत्संबंधी व्यावसायिक आकांक्षाओं के अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण परिवेश की सर्वाधिक छात्राओं ने शिक्षण क्षेत्र को पसंद किया जबकि प्रशासनिक परिवेश की छात्राओं ने इंजीनियरिंग व व्यापार क्षेत्र को बिल्कुल पसंद नहीं किया। व्यापारिक, शासकीय, औद्योगिक परिवेश की छात्राओं ने मेडिकल क्षेत्र से संदर्भित व्यावसायिक आकांक्षा व्यक्त की।

प्राक्कथन

आधुनिक भारतीय शिक्षा में दो मूलभूत चिंता के विषय रहे हैं–प्रथम, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रभावी लोकव्यापीकरण, और द्वितीय, माध्यमिक शिक्षा का प्रभावी व्यावसायिक उन्मुखीकरण। इनमें पहली चिंता संवैधानिक है अतः उस दिशा में

******रीडर*, शिक्षा संकाय, राजीव गांधी महाविद्यालय, भोपाल, म.प्र.

प्रयत्न अधिक हुए। इसके विपरीत दूसरी चिंता का संबंध शिक्षित वर्ग की मानसिकता से है जो परंपरा से व्यावसायिक कार्यों को बौद्धिक कार्यों के समतुल्य नहीं मानते। हन्टर कमीशन (1882) ने व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को समझकर सर्वप्रथम हाईस्कूल के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को स्थान दिया। कमीशन ने पाठ्यक्रमों के विविधीकरण के लिए अकादमी (अ–कोर्स) और व्यावसायिक (ब–कोर्स) धाराओं का प्रस्ताव रखा।

कोठारी आयोग (1964–66) ने व्यावसायिक शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था को आवश्यक बताते हुए कहा कि उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर तथा विद्यालयी शिक्षा पूरी करने वाले छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जाए। पाठ्यक्रम विभिन्नीकरण विद्यार्थियों की रुचियों, आकांक्षाओं आदि मनोवैज्ञानिक विशेषताओं तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के साथ–साथ आजीविका संबंधी आवश्यकताओं के भी अनुरूप होना चाहिए। कोठारी आयोग के इस मत (उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रमों का विभिन्नीकरण) की पुष्टि विमलेश गौतम (1989) का शोधाध्ययन करता है।

मूल समस्या वास्तव में व्यावसायिक शिक्षा की स्वीकार्यता और विश्वसनीयता की है। संशोधित कार्य योजना (1992) ने इस लक्ष्य को पूरी गंभीरता से रेखांकित किया है। सर्वप्रथम कार्यक्रमों की विश्वसनीयता स्थापित की जानी चाहिए जो उसकी गुणवत्ता, उपयुक्तता और स्वीकार्यता पर निर्भर होगी। (अनु. 10.03.04)

उपर्युक्त संदर्भ में कार्ययोजना ने माध्यमिक स्तर (कक्षा नवीं व दसवीं) पर पूर्व व्यावसायिक शिक्षा प्रस्तावित की है जिसके चतुर्विध उद्देश्य हैं–

(क) सरल, उपयोगी, कौशल सीखना।

(ख) व्यावसायिक रुचियों और वरीयताओं का विकास।

(ग) कार्य में प्रतिभागिता की तैयारी।

(घ) कार्य संस्कृति के उपयुक्त मूल्यों का विकास।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में एक प्रमुख समस्या छात्राओं की प्रतिभागिता है। संशोधित कार्य योजना ने इस बात पर बल दिया है कि अपरंपरागत और नई प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में लड़कियों की प्रतिभागिता को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाए।

आवश्यकता व महत्व

विगत वर्षों में हुए अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ कि व्यावसायिक चिंतन लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में कम है। यह पाया गया है कि वे ही लड़कियाँ कार्य जगत में अधिक प्रवेश कर रही हैं जिनकी माँ नौकरी करती हैं या स्वयं का व्यवसाय करती हैं। जिन घरों का वातावरण व्यावसायिक नहीं है, वे लड़कियाँ आगे बढ़ने में कई अड़चनें, जैसे सामाजिक व वैयक्तिक, महसूस करती हैं।

जैन (1995) ने अपने शोधाध्ययन में पाया कि व्यावसायिक चयन एक प्रक्रिया है न कि घटना। व्यावसायिक चुनाव किसी भी व्यक्ति के व्यवहार विकास का एक अंग मात्र नहीं है बल्कि यह उसके संपूर्ण विकास प्रक्रिया का एक हिस्सा है। क्राइट्स (1969) के अनुसार, 'विकासात्मक दृष्टि से व्यावसायिक चयन व्यक्ति का एक अकेला कार्य

नहीं है, बल्कि यह व्यापक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के जीवन के विभिन्न बिंदुओं पर व्यक्ति के विभिन्न व्यवहार सम्मिलित होते हैं।'

किशोरावस्था अपरिमित उत्साह, अस्थिर निर्णयों की अवस्था है। इस उम्र में व्यावसायिक चुनाव अवास्तविक होता है। फिलिप्स (1956) कहते हैं कि 'ऐसा चुनाव नहीं करना चाहिए जो कि उनकी व्यापारिक समस्याओं के विचार-विमर्श के आधार से अलग हो। यह जानना महत्वपूर्ण है कि आकांक्षाएँ वर्णित वास्तविकताओं की ओर ले जाती हैं कि नहीं।' स्टीफेंसन (1957) ने एक हजार नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के व्यावसायिक चुनावों का अध्ययन किया और परिणाम निकाला कि व्यावसायिक आकांक्षाएँ वास्तविक नहीं पाई जाती हैं।

क्राइट्स (1969) के अनुसार, व्यावसायिक चुनाव में प्रथम चरण आकांक्षा का है जिसका वास्तविकता से कोई वास्ता नहीं है। व्यावसायिक आकांक्षा, प्राथमिकता और चुनाव समान सततता पर समझे जाते हैं। व्यावसायिक चुनाव की प्रक्रिया आकांक्षा और चुनाव अपरिमापीय सततता के किसी एक ओर होता है।

आकांक्षा.................प्राथमिकता.............चुनाव

व्यक्ति के जीवन निर्माण में व्यावसायिक आकांक्षाओं का विशेष महत्व होता है। इस उद्देश्य से माता-पिता की पुत्री के लिए आकांक्षा और पुत्री की अपनी व्यावसायिक आकांक्षा के बीच सामंजस्य का मूल्यांकन करना उचित समझा गया। यह अध्ययन छात्राओं और उनके माता-पिता की व्यावसायिक आकांक्षाओं तक सीमित है।

उद्देश्य

- छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा और उनके माता-पिता की आकांक्षा में परस्पर संबंध का विश्लेषण करना।
- विभिन्न परिवेशों की छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का विश्लेषण करना।
- छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र तथा व्यावसायिक आकांक्षा स्तर, उनके परिवेश से संबंध का विश्लेषण करना।
- छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके माता-पिता व्यासायिक स्तर तथा शिक्षा स्तर संबंध का विश्लेषण करना।
- छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पुनर्निर्धारण तथा उनके पाठ्यक्रम से संबंध का विश्लेषण करना।
- छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पुनर्निर्धारण तथा उनके परिवेश से संबंध का विश्लेषण करना।

चर

क. आश्रित चर

1. व्यावसायिक आकांक्षा
2. व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र
3. व्यावसायिक आकांक्षा स्तर
4. व्यावसायिक आकांक्षा पुनर्निर्धारण

ख. मुक्त चर

1. मातृ-पितृ आकांक्षा
2. मातृ-पितृ शिक्षा स्तर
3. मातृ-पितृ व्यावसायिक स्तर

4. परिवेश
5. पाठ्यक्रम

परिकल्पनाएँ

1. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा उनके माता-पिता की तत्संबंधी आकांक्षा से संबंधित नहीं है।
2. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा तथा उनके माता-पिता की आकांक्षा का संबंध हर परिवेश में समान है।
3. परिवेश की भिन्नता के आधार पर छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के क्षेत्र प्रभावित नहीं होते।
4. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके परिवेश से प्रभावित नहीं होते।
5. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके माता के शिक्षा स्तर से प्रभावित नहीं होती।
6. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पिता के शिक्षा स्तर से प्रभावित नहीं होती।
7. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर माता के व्यावसायिक स्तर से प्रभावित नहीं होती।
8. छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पिता के व्यवसायिक स्तर से प्रभावित नहीं होती।
9. उच्चतर माध्यमिक कक्षा में प्रवेश के बाद छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में परिवर्तन नहीं होता।
10. उच्चतर माध्यमिक कक्षा में प्रवेश के बाद छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाएँ हर परिवेश से समान हैं।

प्रतिदर्श विधि

यादृच्छिक स्तरित विधि द्वारा कक्षा इकाई संकुल (उपस्थित छात्राएँ) विधि का उपयोग किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत समस्या अध्ययन में कक्षा दसवीं की छात्राओं का चयन किया गया क्योंकि कक्षा दसवीं तक सभी विद्यार्थियों के लिए समस्त विषयों का अध्ययन अनिवार्य होता है, किंतु कक्षा ग्यारहवीं से विषयों का विभिन्नीकरण हो जाता है और छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषय चयनित करते हैं। इसलिए कक्षा ग्यारहवीं की छात्राओं (कक्षा दसवीं वाली छात्राएँ) का चयन किया गया। अतः सारिणी 1 में न्यादर्श को दर्शाया गया है।

सारिणी 1
प्रतिदर्श आकार

क्र. सं.	*क्षेत्र*	*छात्राएँ*	
		X	*XI*
1	व्यावसायिक	93	90
2	औद्योगिक	97	93
3	शासकीय	102	95
4	ग्रामीण	102	77
	कुल योग	**394**	**355**

उपकरण

1. शोधार्थी द्वारा निर्मित निजी एवं पारिवारिक आकांक्षा प्रपत्र
2. एस.एस. चढ्ढा कृत 'व्यावसायिक आकांक्षा प्रपत्र' तथा 'व्यावसायिक आकांक्षा वर्गीकरण'

का शोधार्थी द्वारा संशोधित रूप का उपयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण व निष्कर्ष

(I) *व्यावसायिक आकांक्षा स्रोत-*

(क) छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा उनके माता-पिता की तत्संबंधी आकांक्षा से संबंधित नहीं है।

सारिणी 2

व्यावसायिक आकांक्षा तथा मातृ-पितृ आकांक्षा स्रोत

व्यावसायिक आकांक्षा	*आवृत्ति*
छात्र ।। माता ।। पिता	180
छात्रा ।। माता-पिता	30
छात्र।। पिता-माता	43
छात्रा-माता ।। पिता	91
छात्र, माता, पिता	50
कुल	394

मुक्तांश 4, सं. = 0.01, काई वर्ग = 188.52

सारिणी 2 में दिए आंकड़ों से स्पष्ट है कि 394 के प्रतिदर्श में 180 छात्राओं की आकांक्षा माता-पिता की आकांक्षा से भिन्न नहीं थी जबकि 91 छात्राओं की आकांक्षा माता-पिता की आकांक्षा से भिन्न थी। 123 छात्राओं की स्थिति में माता और पिता की आकांक्षाओं में भिन्नता थी, इनमें 30 छात्राएँ माता से सहमत पाई गईं, 43 छात्राएँ पिता से सहमत रहीं और 50 छात्राओं ने माता-पिता दोनों से असहमत भिन्नाकांक्षा व्यक्त की।

सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए दो स्थितियाँ स्पष्ट दिखाई दीं (अ) माता-पिता की समानाकांक्षा तथा माता-पिता की भिन्नाकांक्षाएँ।

(ख) छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा तथा उनके माता-पिता की आकांक्षा का संबंध हर परिवेश में समान है।

सारिणी 3

परिवेश के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा का काई वर्ग विश्लेषण

क्र. सं.	*माता-पिता से समान आकांक्षा स्रोत*	*ग्रामीण परिवेश*	*औद्योगिक परिवेश*	*व्यापारिक परिवेश*	*शासकीय परिवेश*	*कुल*
1	समान आकांक्षा	35	39	55	51	180
2	भिन्न आकांक्षा	28	26	19	18	91
	I	**63**	**65**	**74**	**69**	**271**
	माता-पिता की भिन्न आकांक्षाएं					
1	माँ के समान	13	3	7	7	30
2	पिता के समान	11	13	3	16	43
3	दोनों से भिन्न	15	16	9	10	50
	II	**39**	**32**	**19**	**33**	**123**
	कुल योग	**102**	**97**	**93**	**102**	**394**

काई वर्ग = 27.31 (मुक्तांश 12, 0.01 स्तर पर अभीष्ट 26.21)

उपर्युक्त सारिणी 3 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान 27.31 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 26.21 से अधिक है अर्थात् विभिन्न परिवेश की छात्राओं और उनके माता-पिता की व्यावसायिक आकांक्षाओं में अंतर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

ग्रामीण और औद्योगिक परिवेश में छात्र व माता से भिन्न पिता व्यावसायिक आकांक्षाएँ 8 प्रतिशत, माता-पिता से पृथक् छात्र व्यावसायिक आकांक्षाएँ 27 प्रतिशत, तीनों की पृथक-पृथक व्यावसायिक आकांक्षाएँ 15 प्रतिशत हैं जबकि व्यापारिक और शासकीय परिवेश में अधिकांशतः

54 प्रतिशत छात्रा, माता-पिता तीनों में समान व्यावसायिक आकांक्षाएँ पायी गईं।

विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण और औद्योगिक परिवेश में तीनों की (छात्रा, माता और पिता) व्यावसायिक आकांक्षाओं की समानता व भिन्नता लगभग समान है। कहा जा सकता है कि ग्रामीण लोग औद्योगिक परिवेश में आकर वहाँ के कार्य को करते हैं।

(II) *व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र*

(क) परिवेश की भिन्नता के आधार पर छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र प्रभावित नहीं होते।

सारिणी 4 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 158.18 है जो .01 स्तर पर अभीष्ट मान 38.93 से अधिक है अतः चारों परिवेश की छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्रों में अंतर सार्थक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

(III) *व्यावसायिक आकांक्षा स्तर*

(क) छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके परिवेश से प्रभावित नहीं होती।

सारिणी 5 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 95.67 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 11.34 से अधिक है अर्थात् विभिन्न

सारिणी 4

परिवेश की भिन्नता के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र का काई वर्ग विश्लेषण

व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र	*परिवेश*			
	ग्रामीण	*व्यापारिक*	*शासकीय*	*औद्योगिक*
	(102)	(93)	(102)	(97)
इंजीनियर	0	5	20	11
मेडिकल	9	32	36	28
शिक्षण	59	13	23	12
प्रशासनिक	0	27	8	16
व्यापार	0	1	0	6
नौकरी	11	4	6	17
कला	15	3	3	1
रक्षा	8	8	6	6
काई वर्ग = 158.18 (मुक्तांश 21, 0.01 स्तर पर अभीष्ट 38. 93)				

सारिणी 5

परिवेशीय आधार पर छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का काई वर्ग विश्लेषण

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	*परिवेश*				
	ग्रामीण	*व्यापारिक*	*शासकीय*	*औद्योगिक*	*योग*
उच्च	0	6	0	9	15
मध्यम	15	59	72	60	206
उच्च मध्यम	15	65	72	69	221
निम्न	87	28	30	28	173
कुल योग	102	93	102	97	394
काई वर्ग = 95.67 (मुक्तांश 3, 0.01 स्तर पर अभीष्ट 11.34)					

परिवेश की छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में अंतर सार्थक है अत: परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

(i) ग्रामीण आकांक्षा 85% निम्नस्तरीय एवं 15% मध्यमस्तरीय है।

(ii) व्यापारिक, शासकीय, औद्योगिक अर्थात शहरी आकांक्षा लगभग 70% मध्यमस्तरीय एवं 30% निम्नस्तरीय है। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आकांक्षा विस्फोट शहर का लक्षण है। गांव में अभी भी दो वक्त की रोटी से संतोष की मनोवृत्ति है।

(ख) छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके माता के शिक्षा स्तर से प्रभावित नहीं होता।

सारिणी 6 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 63.16 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 16.81 से अधिक है, अर्थात् 0.01 स्तर पर अंतर सार्थक है। माँ के शिक्षा स्तर का

सारिणी 6

माँ के शिक्षा स्तर के संदर्भ में छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का काई वर्ग का विश्लेषण

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	*परिवेश*				
	ग्रामीण	*व्यापारिक*	*शासकीय*	*औद्योगिक*	*योग*
उच्च	0	1	5	9	15
मध्यम	17	42	87	60	206
निम्न	60	43	50	20	173
कुल योग	77	86	142	89	394
काई वर्ग = 63.16 (मुक्तांश 6, 0.01 स्तर पर अभीष्ट 16.81)					

छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव पड़ता है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

(i) अशिक्षित माँ की छात्राओं ने 78% निम्नस्तरीय एवं 22% मध्यमस्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

(ii) प्राथमिक शिक्षा स्तर वाली माँ की छात्राओं ने 99% मध्यम व 1% निम्नस्तरीय व्यवसायों की इच्छा की।

(iii) माध्यमिक शिक्षा स्तर वाली माँ की छात्राओं ने 61% मध्यमस्तरीय, 35% निम्नस्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

(iv) उच्च शिक्षित माँ की छात्राओं ने 67% मध्यमस्तरीय व 22% निम्नस्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

विश्लेषण से स्पष्ट है कि माँ के बढ़ते शिक्षा स्तर के अनुसार उच्च, मध्यम स्तरीय आकांक्षा में वृद्धि और निम्न स्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा में कमी हुई है।

(ग) छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके पिता के शिक्षा स्तर से प्रभावित नहीं होता।

सारिणी 7 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 26.34 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 16.81 से अधिक है अर्थात् 0.01 स्तर पर अंतर सार्थक है। पिता के शिक्षा स्तर का छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव पड़ता है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

(i) अशिक्षित पिता की छात्राओं ने 62% निम्नस्तरीय एवं 37% मध्यम स्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

(ii) प्राथमिक स्तर तक शिक्षित पिता की छात्राओं ने निम्नस्तरीय 67% व मध्यमस्तरीय 33% व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

सारिणी 7

पिता के शिक्षा स्तर के संदर्भ में छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का काई वर्ग विश्लेषण

व्यावसायिक	*शिक्षा स्तर*				
आकांक्षा स्तर	*अशिक्षित*	*प्राथमिक*	*माध्यमिक*	*उच्च*	*योग*
उच्च	0	0	3	12	15
मध्यम	6	17	67	116	206
निम्न	10	35	67	61	173
कुल योग	**16**	**52**	**137**	**189**	**394**
काई वर्ग = 26.34 (मुक्तांश 6, .01 स्तर पर अभीष्ट 16.81)					

(iii) माध्यमिक स्तर तक शिक्षित पिता की छात्राओं ने 49% निम्नस्तरीय व 49% मध्यम स्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

विश्लेषण से स्पष्ट है कि पिता के बढ़ते शिक्षा स्तर के साथ छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में वृद्धि व निम्नस्तरीय व्यवसायों के आकांक्षा स्तर में कमी हुई। अशिक्षित व प्राथमिक शिक्षा स्तर वाले पिता के छात्राओं में उच्चाकांक्षा बिल्कुल नहीं पायी गई।

(घ) छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके माता के व्यवसाय स्तर से प्रभावित नहीं होता।

सारिणी 8 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 5.29 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 9.21 से कम है। अत: 0.01 स्तर पर अंतर सार्थक नहीं है। अर्थात् माँ के व्यावसायिक स्तर का प्रभाव छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पर नहीं पड़ता है, परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

(i) कामकाजी महिलाओं की छात्राओं में 55% निम्नस्तरीय एवं 44% मध्यमस्तरीय व्यावसायिक आकांक्षा पाई गई, जबकि गृहिणी महिलाओं की छात्राओं में 41% निम्नस्तरीय व 54% मध्यमस्तरीय आकांक्षा पायी गई।

(ii) अध्ययन में कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा गृहिणियों की छात्राओं में व्यावसायिक आकांक्षा थोड़ी अधिक 4% पायी गई।

(ङ) छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनके पिता के व्यवसाय स्तर से प्रभावित नहीं होते हैं।

सारिणी 9 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 11.61 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 9.21 से अधिक है अत: 0.01 स्तर पर अंतर सार्थक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सारिणी 8

माँ के व्यावसायिक स्तर के संदर्भ में छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का काई वर्ग विश्लेषण

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	*कामकाजी*			*व्यावसायिक स्तर*		
	उच्च	*मध्यम*	*निम्न*	*कामकाजी*	*गृहिणी*	*योग*
उच्च	0	0	1	1	14	15
मध्यम	0	7	29	36	170	206
निम्न	0	0	45	45	128	173
कुल योग				**82**	**312**	**394**
काई वर्ग = 5.29 (मुक्तांश 2, .01 स्तर पर अभीष्ट 9.21)						

सारिणी 9

पिता के व्यावसायिक स्तर के संदर्भ में छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का काई वर्ग विश्लेषण

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	*व्यावसायिक स्तर*						
	उच्च	*मध्यम*	*निम्न*	*आकस्मिक*	*उच्च मध्यम*	*निम्न आकस्मिक*	*योग*
उच्च	1	6	8	0	7	8	15
मध्यम	8	43	151	4	51	155	206
निम्न	1	23	142	7	24	149	173
कुल योग					**82**	**312**	**394**
काई वर्ग = 11.61 (मुक्तांश 2, .01 स्तर पर अभीष्ट 9.21)							

(i) उच्च मध्यम व्यावसायिक स्तर वाले पिताओं की छात्राओं ने 61% मध्यमस्तरीय और 29% निम्नस्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा व्यक्त की।

(ii) निम्न आकस्मिक व्यावसायिक स्तर वाले पिता की छात्राओं ने मध्यम व निम्न स्तरीय व्यवसायों की आकांक्षा लगभग समान 97% की।

(iii) विशेषत: कहा जा सकता है कि दोनों व्यावसायिक स्तर वाले पिता की छात्राओं में उच्च व्यावसायिक आकांक्षा लगभग समान पायी गई। यद्यपि यह अल्पतम (4%) है।

(च) व्यावसायिक आकांक्षा पुनर्निर्धारण

(i) उच्चतर माध्यमिक कक्षा में प्रवेश के बाद छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में परिवर्तन नहीं होता।

सारिणी 10 से स्पष्ट होता है कि काई वर्ग का परिकलित मान 35.56 है जो 0.01 स्तर पर अभीष्ट मान 6.64 से अधिक है। अत: 0.01 स्तर पर अंतर सार्थक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है।

सारिणी 10

परिवर्तित व अपरिवर्तित व्यावसायिक आकांक्षाओं का काई वर्ग विश्लेषण

व्यावसायिक आकांक्षाएं	*योग*
परिवर्तित	121 (34%)
अपरिवर्तित	234 (65%)
कुल योग	355 (99.9%)
काई वर्ग = 35.56 मुक्तांश 1, 0.01 स्तर पर अभीष्ट = 6.64	

परिवर्तित व्यावसायिक आकांक्षाएँ 34% जबकि अपरिवर्तित व्यावसायिक आकांक्षाएँ 65.9% पाई गईं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अपरिवर्तित व्यावसायिक आकांक्षाओं की तुलना में परिवर्तित व्यावसायिक आकांक्षाएँ कम हैं।

(ii) उच्चतर माध्यमिक कक्षा में प्रवेश के बाद छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाएँ हर परिवेश में समान हैं।

सारिणी 11 से स्पष्ट है कि काई वर्ग का परिकलित मान = 0.25 है जो 0.01 स्तर पर

अभीष्ट मान से कम है अत: सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् हर परिवेश में व्यावसायिक आकांक्षाओं के समान विकास की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

सारिणी 11

परिवेशीय आधार पर व्यावसायिक आकांक्षाओं का काई वर्ग विश्लेषण

परिवेश	*व्यावसायिक आकांक्षाएं*		
	समानाकांक्षा	*भिन्नाकांक्षा*	*योग*
ग्रामीण	51	26	77
व्यापारिक	59	31	90
शासकीय	61	34	95
औद्योगिक	63	30	93
काई वर्ग = 0.25 मुक्तांश 3, .01 स्तर पर अभीष्ट 11.34			

ग्रामीण व व्यापारिक परिवेश की छात्राओं में लगभग समानाकांक्षा (परिवर्तित नहीं) पायी गई, जबकि व्यापारिक, शासकीय, औद्योगिक परिवेश की छात्राओं में भिन्नाकांक्षा (परिवर्तित का औसत) लगभग समान पायी गई।

परिणाम

(1) ग्रामीण व औद्योगिक परिवेश में माता, पिता और छात्रा तीनों में व्यावसायिक आकांक्षाओं की समानता व भिन्नता लगभग समान पायी गई जबकि व्यापारिक व शासकीय परिवेश में छात्रा, माता से भिन्न, पिता की आकांक्षाएँ बिल्कुल समान पायी गई।

(2) माता-पिता के बढ़ते शिक्षा स्तर के साथ-साथ छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में वृद्धि पायी गई।

(3) कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा गृहिणियों की छात्राओं में उच्च व्यावसायिक आकांक्षा अधिक पायी गई।

(4) पिता के व्यावसायिक स्तर के आधार पर छात्राओं ने अधिकांशत: मध्यमस्तरीय व्यवसायों में जाने की इच्छा व्यक्त की।

(5) उच्चतर माध्यमिक कक्षा वाली छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में 34% परिवर्तन पाया गया जबकि 65% छात्राओं ने अपनी आकांक्षाएँ परिवर्तित नहीं कीं।

(6) ग्रामीण व व्यापारिक परिवेश की छात्राओं में लगभग समानाकांक्षा (परिवर्तित नहीं) पायी गई जबकि शासकीय और औद्योगिक परिवेश की छात्राओं में भिन्नाकांक्षा (परिवर्तित) का औसत लगभग समान पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ व सुझाव

इस शोधाध्ययन के निष्कर्ष का उपयोग, शिक्षक, प्रशिक्षक, प्रशासक, शिक्षाधिकारी, शोधकर्ता, पाठ्यक्रम निर्माता (शिक्षा संस्थान, राज्य शिक्षा प्रशिक्षण और अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय के शिक्षाविदों के द्वारा किया जा सकता है।

व्यावसायिक आकांक्षा के संदर्भ में छात्राओं में विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक लक्षण विकसित किये जाएँ जिससे वे भी बालकों की भांति व्यवसायों में भागीदारी दे सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में व्यावसायिक सूचनाएँ उपलब्ध करायी जाएँ जैसे- व्यावसायिक

पत्र-पत्रिकाएँ, नोटिस रोजगार जिन्हें बालिकाएँ देख व पढ़ सकें और विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित व्यवसायों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें।

समय-समय पर शिक्षाविदों और पालकों की भी चर्चाएँ होनी चाहिए। छात्राओं, पालकों को संचार माध्यमों से तथा चर्चाओं के द्वारा परंपरावादी और गैर परंपरावादी व्यवसायों के विषय संबंधी जानकारी देनी चाहिए। माता-पिता की आय, व्यवसाय, शिक्षा, बच्चों के प्रति माता-पिता का रवैया और छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने की तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन व्यावसायिक विकास के संदर्भ में आवश्यक है।

संदर्भ

अग्रवाल, जे.सी. (1984), *लैंडमार्क्स इन द हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडियन एजुकेशन,* विकास पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, पृ. 16-17 ।

क्राइट्स, जे.ओ. (1969), *वोकेशनल साइकोलॉजी* द *मैकग्राहिल* बुक कंपनी, न्यूयार्क।

गौर, जगशंकर (1973), *फैक्टर्स इफेक्टिंग* द *ऑक्यूपेशनल एक्सप्रेशंस ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ दिल्ली,* पीएच.डी., आई.सी.एस.एस.आर.।

गौतम, विमलेश (1989), *डेल्टा स्तरों पर विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचियों का अन्वेषण तथा उसका उनके भावी पाठ्यक्रमों हेतु अभिप्राय,* भारतीय आधुनिक शिक्षा: सप्तक अंक, प्रथम जुलाई, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

जैन, संगीता (1995), *छात्राओं की व्यावसायिक उन्मुखता पर उनकी पृष्ठभूमि संबंधी कारकों का अध्ययन,* साइकोलॉजी, पी.एच.डी., बी.यू., भोपाल।

फिलिप्स ई., जेकब (1956), *चेंजिंग वैल्यूज़ इन कॉलेज,* हार्पर एंड ब्रदर्स, न्यूयार्क।

भारतीय आधुनिक शिक्षा, चतुर्थ अप्रैल 1993, पृ. 12

स्टीफेंसन, आर. एम. (1957), रियलिज़्म ऑफ वोकेशनल च्वायस: ए क्रीटीक एंड एन एग्जाम्पल, *दि पर्सनल एंड गाइडेंस जर्नल,* वोल्यूम (35), इश्यू-8, पृ. 482-488

मुखर्जी, एस.एन. (1966), *हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इंडिया (मॉडर्न पीरियड)* आचार्य बुक डिपोट, बड़ौदा।